नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305

इ-मेल: mgahvpro@gmail.com वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भक्ति काव्य के संस्कार से महात्मा बने गांधी – प्रो. गोपेश्वर सिंह

हिंदी विश्वविद्यालय में 'भक्ति काव्य और महात्मा गांधी' पर व्याख्यान

वर्धा, 17 नवंबर 2017 :महात्मा गांधी आधुनिक काल में भक्ति काव्य के जीवित भाष्य थे। भक्ति काव्य के कवियों अर्थात कबीर, नानक, रैदास और तुलसीदास की गांधी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भक्ति कवियों का अपरिग्रह महात्मा गांधी के जीवन में दिखाई देता है। सत्य से

जुड़ाव के साथ आचरण और वाणी में समानता के तत्व उन्होंने भक्ति कवियों से ही लिए है। भक्ति काव्य अभय का संचार करने वाला है। उक्त विचार सुविख्यात आलोचक प्रो. गोपेश्वर सिंह ने 'भक्ति काव्य और महात्मा गांधी' विषय पर व्याख्यान में रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में शुक्रवार, 17 नवंबर को आयोजित कार्यक्रम में साहित्य विद्यापीठ की संकाय अध्यक्ष प्रो. प्रीति सागर और हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. के. के. सिंह ने किया तथा आभार प्रो. प्रीति सागर ने माना।

प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि गांधी पर भक्ति आंदोलन के कवियों का गहरा प्रभाव रहा है। उन्होंने रामराज्य, चरखा आदि प्रतीकों को भक्ति आंदोलन से ही लिया है। गांधी ने आध्यात्म और

श्रम को एवं चरखे को स्वराज तथा स्वावलंबन से जोड़ा। प्रो. सिंह ने गांधी के साथ टैगोर, पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा मोहम्मद अली जिना के संबंधों को जोडकर अपनी बात रखते हुए बताया कि

गांधी ने नानक और कबीर के श्रम को जीवन में उतारा, उनका मानना था कि श्रम के भेद को खत्म करना ही आधुनिकता है। प्रो. सिंह ने कहा कि बेरोजगारी, प्रदूषण, अस्वच्छता आदि को खत्म करने के लिए हमें गांधी के बताए रास्ते ही अपनाने होंगे।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि जीवन के शाश्वत मूल्यों से भक्ति काव्य के सूत्र जुड़े हुए हैं। आज के कोलाहल भरे वातावरण में भक्ति कार्य और गांधी प्रासंगिक लगते है। भक्ति काव्य में समावेशी परंपरा है और उसे गांधी ने आधुनिक स्पर्श देकर हमारे सामने रखा है। कार्यक्रम में प्रो. कृपा शंकर चौबे, अरुण कुमार त्रिपाठी, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. बीर पाल सिंह यादव, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, प्रो. अखिलेश दुबे, डॉ. अवधेश कुमार, डॉ. अश्विनी सिंह, राकेश मिश्र, संदीप सपकाले, डॉ. अमित राय, डॉ. अमरेंद्र शर्मा, डॉ. शिवशंकर सिंह आदि सहित अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।